ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-3* Issue-12* March- 2019
Anthology : The Research

वृद्धावस्था : समस्या व समाधान

मुहम्मद मुस्तारिक खान
असिस्टेन्ट प्रोफेसर,
राजनीति विज्ञान विभाग,
सेण्ट एण्ड्रयूज कॉलेज
गोरखपुर

सारांश

वृद्धावस्था मानव जीवन का वह चरण माना जाता है जहां तक पहुंचने में व्यक्ति अपने बाल्यकाल व युवावस्था से होकर गुजरता है। वृद्धावस्था आते–आते व्यक्ति का जीवन अनेक खट्टे–मीठे अनुभवों से दो चार हो चुका होता है। ऐसा माना जाता है कि एक युवा की आंखों में भविष्य के सपने होते है, एक गृहस्थ व्यक्ति अपने वर्तमान की समस्याओं से जूझता हुआ दिखाई पड़ता है, परन्तु वह एक वृद्ध व्यक्ति की आंखों में केवल उसेक अतीत की कुछ धुंधली यादें ही होती है।

वृद्धावस्था को प्राप्त करने की निजी विशेषताएं होती है। उसके व्यवहार को कुछ शारीरिक परिवर्तन प्रभावित करते हैं जैसे शक्ति का ह्रास, उसके जीवन की मृत्यु, समाज और परिवार का बदला हुआ व्यवहार, उसक दूसरा रूप है। वृद्धावस्था में व्यक्ति के शरीर में अनेक परिवर्तन होते हैं जिससे वह दूसरे लोगों की भावनाओं को समझने में असमर्थ रहते हैं। ये लोग अपने अतीत में किये गये कार्यों की प्रशंसा सुनने में आनन्द लेते हैं यदि उनकी कमजोरियों का उल्लेख किया जाता है तो वह बुरा मान जाते हैं। उनकी यही इच्छा होती है कि कम आयु के लोग अब भी उनकी सलाह पर कार्य करें।

मुख्य शब्द : वृद्धजन, जीविकोपार्जन, नगरीकरण, भौतिकवाद, व्यक्तिवाद, वृद्धाश्रम, सरकार, योजनाएँ

प्रस्तावना

वृद्ध व्यक्ति विशिष्ट चरित्र का होता है कि वे नवीन पीढी के लोगों के व्यवहारों की कुछ न कुछ आलोचना करते रहते हैं। डा. ऋचा के अनुसार 'वृद्ध लोगों में अक्सर नव–ज्ञानार्जन और नूतन मूल्यों की ग्राह्यता की शक्ति कमजोर हो जाती है। समाज के परिवर्तनशील नवीन आचार व्यवहार एवं मूल्यों से उन्हें चिढ़ होती है।इन्हें स्वीकार नहीं कर पाने के कारण पारिवारिक एवं सामाजिक सामंजस्य समस्याओं सेपूर्ण हो जाता है।''[1]

वृद्ध व्यक्ति के पारिवारिक एवं सामाजिक सामंजस्य के अभाव में उनमें भावनामक तनाव, असुरक्षा तथा किसी प्रकार के भौतिक अभाव का अनुभव होने लगता है। इसके फलस्वरूप उसमें धन, सम्पत्ति आदि के प्रति मोह काफी बढ़ जाता है। 'कभी–कभी जीवन के अंतिम दिनों व्यक्ति शंकालू, झगड़ालू, कंजूस और चिड़चिड़ा हो जाता है।[2]

विभिन्न धर्मों में वृद्ध लोगों की समस्या के समाधान के लिए विभिनन उपाय सुझाये हैं। 'इसाई धर्म में 'वृद्धावस्था में सहायता के अनेक धार्मिक उपाय निकाले थे। न्यूज में वृद्धों का परिवार में बहुत सम्मान दिया जाता रहा है और ईसाइयों ने अभिवृत्ति को सांस्कृतिक उत्तराधिकार स्वरूप ग्रहण किया गया है। मुसलमानों में वृद्धों की आवश्यकता की पूर्त धर्म निर्देशन उपकार के कार्यों के तहत जकात और खैरात के रूप में की जाती है। हिन्दुओं के धार्मिक ग्रन्थों में ..... वृद्धों की भोजन और सेवा

आदि से सम्बन्धित अनेक रूपों में विभिन्न की सहायता के अनेक निर्देश दिये गये हैं। शुक्राचार्य की शुक्रनीति में ऐसा उल्लेख है जिनमें वृद्धावस्था में संचित निधि और पेंशन जैसी सुविधाओं की व्यवस्था प्राचीन भारत में होने का एहसास होता है.....महाभारत में वृद्धों की सेवा के लिए राजाओं को निर्देश है कि उपासिता च वृद्धानाम्।[3]

अन्य ग्रन्थों में जरूरतमन्द तथा वृद्धों के लिए राजाओं के कर्तव्य बतलाये गये हैं।

पाश्चात्य विचारकों ने भी अपने अपने ढंग से एवं दृष्टिकोणों से वृद्धावस्था पर विचार प्रकट किए है। ए0वी0हरलाक के अनुसार यह एक पतनोन्मुख अवस्था है। उन्होंने इसे दूसरा बाल्यकाल कहा है। इस अवस्था के साथ व्यक्ति में कम शक्ति और प्रतिक्रिया की गति में शिथिलता आ सकती है किन्तु वह इसी पूर्ति कौशल विकास के साथ कर सकता है। किन्तु इसके बाद की अवस्था प्रारम्भ होती है जिसमें व्यक्ति कम या अधिक भुलक्कड़, लापरवाह,सामाजिक रूप से विमुख तथा एकाग्र चिन्तन की कमी से ग्रस्त हो जाता है।'[4]

पाल वी0 लैम्बर ने भी वृद्ध व्यक्तियों की कमी से ग्रस्त अवस्था का उल्लेख किया है। वृद्ध लोगों का शारीरिक स्वास्थ्य तेजी से गिरता है। अधिकांश वृद्धों में खांसी और जुकाम जैसे विकार देखे जाते है।। जो हल्के मौसमी परिवर्तनों से भी उत्पन्न हो जाता है। वृद्धावस्था में आंख की पुतलियां धंस जाती हैं, व्यक्ति झुक जाता है, जोड़ों में दर्द महसूस करता है और ये परिस्थितियां इस तथ्य का प्रमाण हैं कि वृद्ध व्यक्ति की संवेदनशीलता क्षीण हो जाती है। और उसके स्नायुक्रम शिथिल पड़ जाते हैं। उसकी स्पर्श, घ्राण और श्रवण शक्ति भी क्षीण हो जाती है।.....शरीर और बुद्धि का संतुलन बिगड़ जाता है। .....वृद्ध व्यक्तियों की चलने फिरने की क्षमता भी कम हो जाती है और वे अधिक पराश्रित हो जाते हैं।[5]

जार्ज लेहनर आदि विद्वानों के अनुसार, वृद्ध व्यक्ति तीन प्रकार के भय से घिरा रहता है– ये भय हैं–पराश्रितता एवं अनुपयोगिता का भय, बीमारी का भय, तथा अकेलेपन का भय। 'इनके अन्तर्गत क्रमशः सेवानिवृत्ति, बेरोजगारी, आर्थिक असुरक्षा, मानसिक चैतन्यता में कमी, मानवी कौशल में कभी सहारे के लिए बच्चों पर निर्भरता ....बीमारी असशक्त तथा अनुपयोगी जीवन के कारण धीरे–धीरे सभी के सम्पर्क में कमी का भय, जीवन साथी एवं मित्रों की मृत्यु, तिरस्कार, निराशा पद में गिरावट आदि सम्मिलित हैं।[6]

वृद्ध व्यक्ति को रोग तथा शारीरिक मानसिक, आर्थिक एवं अनेक प्रकार सामाजिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। फिर भी अलग–अलग संस्कृतियों में देश–काल के अन्तर पर समय–समय पर उनका समाहार भी किया गया है, साथ ही बुजुर्गों की परिवार एवं समाज में उपयोगिता स्वीकार की गयी है। वृद्धों के अनुभवों एवं ज्ञान का लाभ नवीन पीढ़ी अर्जित करती है। डा. ऋचा ने लिखा है कि 'उनकी मनोशारीरिक कठिनाइयों और आर्थिक अक्षमताओं में सहायता और सबल देकर उनके जीवन को अधिक सार्थक, उपयोगी और मानवोचित बनाने की चेष्टायें सदा से विभिन्न धर्मों समाजों और राष्ट्रों ने स्वैच्छिक और राजकीय आधारों पर की है।[7]

भारतीय परिवारों में वृद्धों की भूमिका सदैव से ही महत्वपूर्ण रही है तथा इसके महत्व को पाश्चात्य विचारकों का भी समर्थन मिला है। भारतीय संयुक्त परिवारों का अस्तित्व बिना वृद्धों के सम्भव ही प्रतीत नहीं होता है।

पणिक्कर ने लिखा है कि ''हिन्दू समाज की इकाई व्यक्ति नहीं बल्कि संयुक्त परिवार है।''[8]

इरावती कर्वे का कथन भी परिवार में वृद्धों की भूमिका को स्पष्ट करता है। उनके अनुसार ''संयुक्त परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो एक ही घर में रहते हैं, एक रसोई में बना भोजन करते है, जो सामान्य सम्पत्ति के स्वामी होते हैं, पूजा में सामान्य रूप से भाग लेते हैं तथा जो किसी न किसी रूप में एक–दूसरे के रक्त सम्बन्धी होते हैं।[9]

वृद्धावस्था में व्यक्ति चाहे स्त्री हो या पुरुष अनेक सामाजिक, आर्थिक, स्वास्थ्य सम्बन्धी व मनोवैज्ञानिक समस्याओं से जूझता हुआ प्रतीत होता है।

वृद्ध व्यक्ति समाज में होते हुए बदलावों के अनुरूप अपने आपको ढालने में कभी–कभी असमर्थ महसूस करता है। वह इस सोच से भी प्रभावित होता है कि समाज या परिवार को उसकी कोई आवश्यकता नहीं है तथा समाज व परिवार उसके विचारों के विपरीत कार्य कर रहा है। परिणाम स्वरूप वह चिड़चिड़ा व एकाकी हो जाता है। उसे इन विचारों से निकालने व यह एहसास दिलाने की आवश्यकता होती है कि युवा समाज और परिवार को उसके

अतीत के अनुभवों की आवश्यकता है तथा वृद्ध व्यक्ति समाज और परिवार का एक महत्वपूर्ण अंग है। ऐसा करने से वृद्ध व्यक्तियों में एक नई स्फूर्ति का उदय होगा तथा जीने की चाह पैदा होगी।

वृद्धावस्था में अपने अंतिम दिनों की चिन्ता होना स्वाभाविक है। यह चिन्ता वृद्धों में आर्थिक असुरक्षा की भावना उत्पन्न करती है कभी कभी ऐसा भी देखा गया है कि वृद्ध व्यक्ति जल्दी किसी पर विश्वास नहीं करते। उनके इस आचरण का निदान मनोवैज्ञानिक ढंग से तथा प्रेम से करना चाहिए। वृद्धों में आत्मविश्वास जगाने के लिए तथा जीने की चाह उत्पन्न करने के लिए परिवार व समाज के साथ–साथ कई समाजसेवी संस्थाएं भी आगे आई हैं। वृद्ध व्यक्ति न केवल अपने परिवार बल्कि समाज की भी जिम्मेदारी हैं तथा इनकी समस्याओं का निदान करने के लिए सभी को अपना सहयोग देना चाहिए।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. *डॉ. ऋचा : वृद्ध कल्याण (सम्पादक डा. गिरीश कुमार) पृ0 502*
2. *वहीं पृ0 502–503*
3. *वहीं पृ0 503*
4. *वहीं पृ0 504*
5. *वहीं पृ0 505*
6. *वहीं पृ0 506*
7. *वहीं पृ0 506*
8. *के0एम0 पणिक्कर, हिन्दू समाज निर्णय के द्वार पर पृ0 16*
9. *जी0के0 अग्रवाल भारतीय सामाजिक संस्थाएं पृ0 183*